चुनावी मौसम में बह रही देसी शराब की धार

गुड़ के दाम एक महीने में ₹170 क्विंटल बढ़े

[श्रेय जय | नई दिल्ली]

लोकसभा चुनाव के सीजन में कई तरह के कारोबार भी बढ़ने लगते हैं। ऐसा ही एक बिजनेस देसी शराब का है, जिसके बारे में कोई भी बात नहीं करना चाहता।

ईटी को मिली जानकारी के मुताबिक, उत्तर भारत में चुनाव पास आते ही गुड़ मैन्युफैक्चरर्स, शीरा कारोबारी और देसी शराब बनाने का लाइसेंस रखने वाली चीनी मिलें राजनीतिक दलों और उम्मीदवारों के साथ देसी शराब बेचने या अल्कोहल बनाने के लिए रॉ मैटीरियल से जुड़ी डील्स करना शुरू कर देते हैं।

देश में सबसे अधिक लोकसभा सीटों वाले राज्य उत्तर प्रदेश में ऐसी गतिविधियां बड़े स्तर पर होती हैं। प्रचार के जोर पकड़ने के चलते मुजफ्फरनगर मंडी में गुड़ के दाम एक महीने में ही 170 रुपये प्रति क्विंटल चढ़कर 1,200 रुपये के साथ तीन वर्ष के हाई पर पहुंच गए हैं।

मंडी के एक बड़े ट्रेडर ने बताया कि आमतौर पर डिमांड रोजाना चार लाख किलो की होती है, लेकिन मार्च-अप्रैल में यह 20-25 फीसदी बढ़ गई। उन्होंने कहा, 'कोई भी यह पुष्टि नहीं कर सकता कि लिकर प्रोड्यूसर्स इसकी बल्क में खरीदारी कर रहे हैं, लेकिन चुनाव के सीजन में वॉल्यूम बढ़ने की वजह यही है।'

देश में देसी शराब के प्रॉडक्शन और खपत में यूपी की लगभग आधी हिस्सेदारी है। पिछले आंकड़ों पर नजर डालने से पता चलता है कि चुनावी वर्ष में देसी शराब के प्रॉडक्शन और खपत में 5-10 फीसदी इजाफा होता है।

यूपी में एक शुगर मिल मालिक के मुताबिक, 'चुनावी साल में डिमांड बढ़ने के चलते देसी शराब बनाने वाले गुड़ या शीरे की जगह केमिकल का इस्तेमाल करने लगते हैं, जो खतरनाक है।

> **"कोई भी यह पुष्टि नहीं कर सकता कि लिकर प्रोड्यूसर्स इसकी बल्क में खरीदारी कर रहे हैं, लेकिन चुनाव के सीजन में वॉल्यूम बढ़ने की वजह यही है**
>
> **गुड़ ट्रेडर**
> मुजफ्फरनगर मंडी

हरियाणा, विशेषतौर पर गुड़गांव से बड़ी मात्रा में देसी शराब गुजरात और राजस्थान अवैध तौर पर भेजी जाती है।'

उन्होंने कहा कि देसी शराब का अवैध प्रॉडक्शन इसके आधिकारिक प्रॉडक्शन के 50 फीसदी से भी ज्यादा है।

यूपी एक्साइज डिपार्टमेंट की वेबसाइट पर मौजूद डेटा के मुताबिक, राज्य में 158 चीनी मिलों में से 62 के पास डिस्टिलरी की सुविधा है।

देसी शराब का सेल प्राइस 350 रुपये प्रति केस (एक केस में 750 एमएल की 12 बॉटल) है। राज्य के टैक्स और ड्यूटीज को मिलाकर यह कीमत 500 रुपये से ऊपर चली जाती है।

शुगर का बाईप्रॉडक्ट शीरा लिकर बनाने के लिए रॉ मैटीरियल के तौर पर इस्तेमाल होता है और विशेष तौर पर उत्तर प्रदेश में चुनावी वर्ष में इसकी कीमतें बढ़ जाती हैं। पिछले सीजन में देश की शुगर इंडस्ट्री ने 1.08 करोड़ टन शीरे का प्रॉडक्शन किया था। वाइन इंडस्ट्री में इसकी काफी मांग होती है।

The Economic Times.
5-5-14.